राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए हिन्दी भाषा उपयोगी : कुलपति

▶ हिन्दी पखवाड़ा गैर हिन्दी भाषा क्षेत्रों में भी आयोजित की जानी चाहिए

स्वदेश संवाददाता

रांची : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति क्षिति भूषण दास ने कहा कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए हिन्दी भाषा उपयोगी है। हिन्दी बोलने पर हर भारतीय को गर्व की अनुभूति होनी चाहिए । हिन्दी हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है। पूरे देश को जोड़ने का कार्य हिन्दी भाषा करती आई है। दास बुधवार को हिन्दी दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि गैर हिन्दी भाषा के लोगों को हिन्दी की महत्ता को स्नेह के साथ आज सीखाने की जरूरत है। हिन्दी पखवाड़ा गैर हिन्दी भाषा क्षेत्रों में भी आयोजित की जानी चाहिए । साथ हीं उन्होंने कहा कि हिन्दी को सिर्फ दिवस के रूप में नहीं पूरे साल उत्सव के रूप में देखा जाना चाहिए । मौके पर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और डीएसडब्लू प्रो रत्नेश विश्वकसेन ने कहा कि राष्ट्र भाषा के लिए अधिकतम योग्यता रखने वाली भाषा कोई है तो वह हिन्दी है। हिन्दी में हम जो सोचते है वो ही हम लिखते और बोलते हैं। हिन्दी दिवस का नाम राजभाषा हिन्दी दिवस कहना ज्यादा उचित होगा । कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण विश्वविद्यालय के गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र से आने वाले शिक्षकों ने मंच से अपने अनुभव साझा किए। इस दौरान परीक्षा नियंत्रक प्रभुदेव कुरले ने कहा कि झारखंड आने के बाद उन्होंने हिंदी सीखने पर ज्यादा जोर दिया। इसका फायदा उन्हें आज मिल रहा है कि वह छात्रों औ? अभिभावकों से सीधा संवाद आज हिन्दी में आसानी से कर पा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर आईक्यूएसी के निदेशन प्रो आ? के डे ने कहा कि ओडिसा में स्कूली शिक्षा के दौरान उन्होंने हिन्दी सीखी जरूर थी लेकिन हिन्दी को आत्मसात झारखंड में आने के बाद किए। इसका नतीजा है कि वो आज मंच से हिन्दी संबोधन आसानी से कर पा रहे हैं । इनके अलावा दक्षिण भारत से आने वाले डा नागापवण और डा नरेश बुरला ने भी हिन्दी के महत्व को सभी से साझा किया । कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के डा उपेंद्र कुमार सत्यार्थी और सहायक कुलसचिव डा शिवेंद्र ने समापन भाषण दिया । इस दौरान हिन्दी विभाग के शोधार्थियों द्वारा निर्मित लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। फिल्म का निर्देशन रवि रंजन ने किया ।

केंद्रीय विवि

केंद्रीय विवि, झारखंड के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कहा है कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए हिंदी उपयोगी है. हिंदी बोलने पर हर भारतीय को गर्व होना चाहिए. प्रो रत्नेश विश्वकसेन ने कहा कि राष्ट्र भाषा के लिए अधिकतम योग्यता रखनेवाली भाषा हिंदी है.इस अवसर पर गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों से आनेवाले शिक्षकों ने भी अपने अनुभव बांटे. इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक प्रभुदेव कुरले, प्रो आरके डे , डॉ नागापवण, डॉ नरेश बुरला, रवि रंजन, सूरज रंजन, प्रीति सिंह, डॉ उपेंद्र कुमार सत्यार्थी व डॉ शिवेंद्र मौजूद थे.

Hindi is the identity of our Indian culture :VC

RANCHI: On the occasion of Hindi Diwas, a program was organized at Cheri Manatu Auditorium of Central University of Jharkhand. The program was presided over by Vice Chancellor Kshiti Bhushan Das.

Teachers who are from non-Hindi speaking areas shared their experiences on this occasion.

During this, Controller of Examinations Prabhudev Kurle said that after coming to Jharkhand, he laid more emphasis on learning Hindi; he is getting its benefit today.

He said that he is able to communicate directly with the students and parents easily. IQAC Director Prof. K. Dey said that I had learnt Hindi during my schooling in Orissa, but assimilated Hindi after coming to Jharkhand, as a result of which today he is able to address in Hindi from the stage easily.

Apart from this, Dr. Nagapawan and Dr. Naresh Burla, who hails from South India also shared the importance of Hindi with everyone.

During the program Vice Chancellor Kshiti Bhushan Das said that Hindi language is useful for maintaining national unity and integrity, every Indian should feel proud of speaking Hindi.

Hindi is the identity of our Indian culture, Hindi language has been doing the work of connecting the whole country, there is a need to teach the importance of Hindi to non-Hindi speaking people with affection. Hindi Pakhwada should be organized in non-Hindi language areas also. He said that Hindi should be celebrated not just as a day but as a festival for the whole year.

Head of Hindi department and DSW Prof. Ratnesh Vishwakasen said that if there is any language which has maximum qualification for national language, it is Hindi. We write and speak what we think in Hindi. It would be more appropriate to name Hindi Day as Official Language Hindi Diwas.